गौतम बुद्ध की कहानी

ऐनी रॉकवेल

चित्र: फहीमेह अमीरी

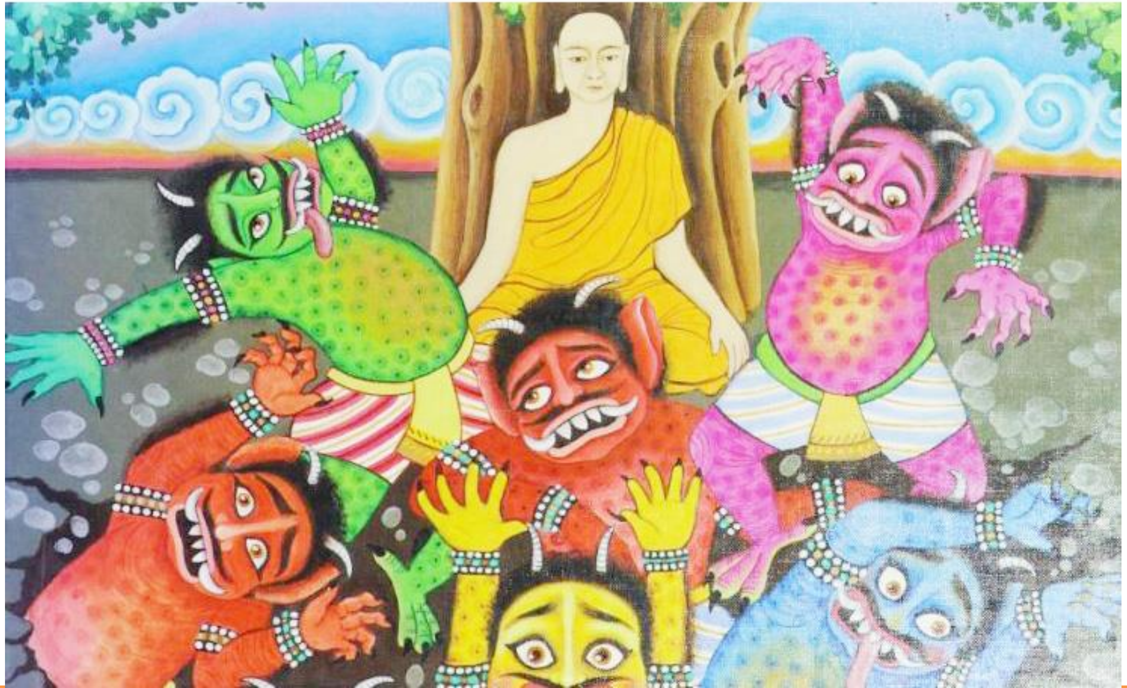

गौतम बुद्ध की कहानी

ऐनी रॉकवेल

चित्र: फहीमेह अमीरी

दो हज़ार साल से भी पहले, एक अमीर राजा और एक सुंदर रानी एक महल में रहते थे.

उनके महल के पीछे बर्फ से ढके हिमालय के पहाड़ थे. वहां की पिघलने वाली बर्फ नीचे के मैदानी इलाकों में ताजा पानी भेजती थी. मीठे आम के पेड़ों के जंगल, रंग-बिरंगे पक्षियों के गीतों से भरे थे. वहां के खेत धान से लदे थे, इसलिए राजा के सभी लोगों के पास पर्याप्त भोजन था. राजा और रानी के पास दुनिया में एक बच्चे को छोड़कर बाकी सब कुछ था. अपने सभी आशीर्वादों के साथ भी वे खुश नहीं थे, क्योंकि उनकी एक बच्चे की बड़ी प्रबल इच्छा थी.

एक रात रानी को एक विचित्र स्वप्न आया. बर्फ की तरह एक सफेद हाथी, जिसकी सोने जैसी आंखें और चांदी के चमकने वाले दांत थे, एक ऊंचे पहाड़ से नीचे आया. उसकी सूंड में एक कमल का फूल था और वो जोर से चिंघाड़ता हुआ रानी की ओर दौड़ा. रानी डर गई, लेकिन सुंदर हाथी अचानक से रुका और उसने रानी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया.

जब वो सुबह उठी, तो रानी ने सपने का अर्थ समझने के लिए राज्य के सबसे बूढ़े और समझदार साधु को पहाड़ में उसकी गुफा से बुलवाया. रानी को यकीन था कि उसका सपना बहुत महत्वपूर्ण था.

साधु ने सपने का मतलब समझाते हुए कहा कि रानी को जल्द ही एक बेटा होगा जो एक महान लीडर बनेगा.

यह सुनकर राजा और रानी बहुत खुश हुए.

जब बच्चे के जन्म का समय निकट आया, तो प्रथा अनुसार, रानी महल छोड़कर अपनी माता-पिता के घर चली गयीं. लेकिन अभी वो ज्यादा दूर नहीं गयीं थीं - जब रानी और उनकी दासियाँ फूलों के पेड़ों से भरे जंगल से गुजर रही थीं, तभी छोटे राजकुमार का जन्म हुआ.

उसके बाल रात की तरह काले और चमकदार थे, और उसकी त्वचा सुबह के सूरज की तरह गहरे सोने जैसी चमक रही थी. जैसे ही वो पैदा हुआ, हाथियों का एक जोड़ा आया और उन्होंने बच्चे को अपनी सूंड से गर्म, फिर ठंडे पानी से नहलाया. वृक्षों से सुगंधित पुष्प गिराकर उसे ढक दिया. छोटे बच्चे का रोना उतना ही मधुर था जितना कि उसके चारों ओर गाते हुए पक्षी का कलरव था. उसका नाम सिद्धार्थ गौतम था.

हालाँकि राजा को अपने छोटे बेटे को देखकर बहुत खुशी हुई, लेकिन उन्हें बहुत दुख भी हुआ, क्योंकि बच्चे की माँ का केवल सात दिनों बाद ही देहांत हो गया. राजा की बहन और कई दाइयों ने नवजात राजकुमार की देखभाल की. राजा ने अपने राज्य के बुद्धिमान ब्राह्मणों को, बच्चे का भाग्य को बताने के लिए बुलाया.

जब उनमें से सबसे बुद्धिमान व्यक्ति ने बच्चे की जांच की, तो उसने उसके छोटे पैरों के तलवों पर छोटे-छोटे चक्रों का एक पैटर्न देखा.

"ये जीवन के चक्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे हममें से कोई भी बच नहीं सकता," ब्राह्मण ने कहा. "इन चक्रों का मतलब है कि आपके बेटा महान भाग्य लेकर आएगा."

"पहाड़ वाले समझदार साधु ने भी यही कहा था," राजा ने कहा. "लेकिन कृपया मुझे ठीक-ठीक बताएं कि मेरे बेटे की नियति क्या होगी."

ब्राह्मण ने कहा, "मैं आपको केवल इतना ही बता सकता हूं कि अगर राजकुमार सिद्धार्थ एक महल में रहेगा, तो वो दुनिया में सबसे महान और सबसे शक्तिशाली राजा बनेगा. लेकिन अगर वो महल के बाहर रहेगा, तो वो एक भिखारी होगा. फिर दुनिया का हरेक दुख उसे पीड़ित करेगा, और वो उसके लिए सहन करना मुश्किल होगा."

जब राजा ने यह सुना, तो उन्होंने कसम खाई कि वो राजकुमार सिद्धार्थ कभी भी पीड़ा देखने नहीं देगा, क्योंकि वो अपने बेटे को कभी भी महल की चारदीवारी से बाहर नहीं जाने देगा.

राजा ने तीन नए महल बनवाए, एक सर्दियों के लिए, एक बसंत के लिए, और एक वर्षा ऋतु के लिए, जब महीनों तक बिना रुके बारिश होती थी. सारे महल खेलों और मीठी सुगंध से भरे थे. वहां कहानीकार, संगीतकार और नर्तक थे जिससे राजकुमार कभी बोर न हो. राजकुमार के लिए दुर्लभ और स्वादिष्ट शर्बत बनाने के लिए हर दिन पहाड़ों से बर्फ नीचे लाया जाता था और उसे फलों के रस के साथ मिलाया जाता था.

राजा ने तीन ताल बनवाए जिन्हें बागवानों ने, राजकुमार के लिए सुंदर कमल के फूलों से सजाया. शिक्षक आए, और जल्द ही राजकुमार भारत की सभी भाषायें सीख गया. वो दूर चीन के चित्र-लेखन को भी पढ़ सकता था. वो कभी अकेला नहीं रहता था क्योंकि उसका चचेरा भाई आनंद उसका सबसे अच्छा दोस्त बन गया था. उसके पास बात करने के लिए एक पालतू तोता भी था. एक नौकर हमेशा उनके साथ एक बड़ी सफेद छतरी लेकर चलता था ताकि राजकुमार सिद्धार्थ को कभी भी तेज धूप, या ठंडी बारिश, या सूखी धूल से पीड़ित न होना पड़े और उसे छींक न आए.

कोई भी व्यक्ति या प्राणी जो बूढ़ा, बीमार या किसी भी तरह से पीड़ित था, वो महल की चारदीवारी के भीतर नहीं रह सकता था. जब राजकुमार सो रहा होता था तब बागवान पूरी रात काम करते और वो मुरझाए हुए फूल और पत्ते हटाते, टिड्डे और अन्य कीड़ों को उठाते जो अपने गीत गाकर मर गए थे, या घोंसले से गिरे पक्षियों के टूटे अंडों को उठाते जिससे राजकुमार उन्हें न देख सके.

राजकुमार सिद्धार्थ के पिता ने उन्हें एक घोड़ा और रथ दिया और साथ में चन्ना नाम के एक अच्छे व्यक्ति को उनका सारथी नियुक्त किया. राजकुमार और चन्ना विशाल महल के उद्यानों में चारों ओर घूमते थे, जो एक शहर के समान विशाल था, लेकिन महल से बाहर जाने वाले द्वार उनके लिए हमेशा बंद रहता था.

राजकुमार ने अपने पिता से उसे बाहर जाने देने की विनती की. अंत में, राजा को हाँ कहना पड़ा, क्योंकि उन्होंने बाहर एक शानदार पार्क बनवाया था, जिसमें दुनिया के तमाम अजूबे भरे हुए थे. पर पार्क पहुँचने के लिए राजकुमार सिद्धार्थ को शहर से होकर गुजरना पड़ता था.

राजा अत्यंत सावधान था. उसने शहर के सभी घरों को चमकीले रंग से रंगवाया था. मरे पौधों को स्वस्थ पौधों से बदला गया था. नगर के सभी लोगों को नए कपड़े और खाने के लिए पर्याप्त भोजन दिया गया था. राजा ने उन्हें अपने सभी बूढ़े और बीमार लोगों को अंदर छुपाने का आदेश दिया था. जब राजकुमार सिद्धार्थ सड़क से गुजरे तो सभी युवा, स्वस्थ, अच्छे दिखने वाले लोगों और उनके बच्चों को, मुस्कुराना और खुश होना अनिवार्य था.

लेकिन सड़क पर राजकुमार ने अचानक एक आदमी को झुकी हुई रीढ़ और बेंत के साथ चलते देखा. उसके सफेद एकदम बाल थे.

"उस आदमी के बाल इतने कम और अजीब रंग के क्यों हैं? वो सीधा और लंबा क्यों नहीं खड़ा हो पा रहा है?" राजकुमार ने चन्ना से पूछा.

"वो आदमी बहुत बूढ़ा और लंगड़ा है," सारथी ने उत्तर दिया. "हम सब लोग एक दिन वैसे ही होंगे."

राजकुमार सिद्धार्थ ने बूढ़े आदमी के सफेद बालों और मुड़ी हुई रीढ़ को बड़ी डरावनी आँखों से देखा. "क्या तुम भी किसी दिन ऐसे ही बूढ़े हो जाओगे? क्या मेरा भी वही हाल होगा? और मेरे पिता का? क्या आनंद का भी?" उसने चन्ना से पूछा.

"हाँ, हम में से हर इंसान बूढ़ा होगा, महाराज, यहाँ तक कि आपका घोड़ा भी," सारथी ने उत्तर दिया.

वे कुछ और आगे बढ़े, और उन्होंने क्या देखा. एक आदमी ज़मीन पर पड़ा था और बीमारी और भयानक पीड़ा से कराह रहा था. वो एक ज़नाज़े के जुलूस के सामने से गुज़रे और उन्होंने मातम मनाने वाले लोगों को रोते और विलाप करते हुए देखा.

उस दिन राजकुमार सिद्धार्थ को वृद्धावस्था, बीमारी और मृत्यु के बारे में पता चला. जैसा कि सबसे बुद्धिमान ब्राहमण ने कहा था वो देखकर राजकुमार का हृदय में करुणा से भर गया. उसका दिल उन सभी लोगों के लिए दुख से भर गया, जो इस प्रकार पीड़ित थे.

"क्या बुढ़ापे, बीमारी और मृत्यु से बचने का कोई उपाय नहीं है?" राजकुमार ने चन्ना से पूछा.

"नहीं," सारथी ने कहा. "हम सभी एक दिन मर जाएंगे. लेकिन मृत्यु भी हमारे दुखों को समाप्त नहीं कर पाएगी. जीवन का पहिया घूमता रहेगा, और हम सभी उसमें फंसे रहेंगे. हम में से प्रत्येक का किसी-न-किसी रूप में पुनर्जन्म होगा, चाहे वह मनुष्य के रूप में हो या पशु के रूप में. केवल वे जो निर्वाण प्राप्त करेंगे वे ही सभी चीजों में सच्चाई देख सकेंगे. केवल उन्हें ही जीने, पीड़ित होने, मरने और उसी के लिए दुबारा पैदा होने की ज़रूरत नहीं होगी."

तब राजकुमार सिद्धार्थ ने एक भिखारी को देखा जो एक साधु भी था. राजकुमार ने उस व्यक्ति की आँखों में शांति देखी. चन्ना ने उससे क्या कहा था और उसने उस दिन क्या देखा था उस सबके बारे में उसने गहराई से सोचा. क्या दुख को समाप्त करने का कोई रास्ता नहीं है? लेकिन राजकुमार ने अपने सोच के बारे में किसी को बताया नहीं.

मारा नाम का एक शैतान था. वो बिना बताए ही जान गया था कि राजकुमार क्या सोच रहा था. उसने देखा कि राजकुमार सिद्धार्थ के दिल में दूसरों की पीड़ा के लिए कितनी करुणा थी, और वो कितने चिंतित थे. मारा बेहद दुष्ट था और उसे दूसरों की पीड़ा देखने से बढ़कर और कुछ भी अच्छा नहीं लगता था. मारा ने राजकुमार को पीड़ा को समाप्त करने का रास्ता खोजने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करने का अपना मन बनाया.

राजकुमार सिद्धार्थ की जैसे-जैसे दुनिया में हरेक चीज के लिए करुणा गहरी और गहरी होती गई, वैसे-वैसे वो और दुखी होते गए. जब राजा ने देखा कि उनका पुत्र इतनी दौलत होने के बावजूद हमेशा उदास और सोच में डूबा रहता था, तो उन्हें लगा कि शायद राजकुमार अकेला महसूस करता होगा और उसकी शादी कर देनी चाहिए. एक पत्नी निश्चित रूप से राजकुमार को खुश करेगी.

महल में सुंदर राजकुमार से मिलने के लिए पूरे देश की सबसे चतुर, सबसे अमीर और सबसे खूबसूरत युवा महिलाओं को आमंत्रित किया गया. प्रत्येक को राजकुमार सिद्धार्थ ने एक कीमती गहना दिया, लेकिन उसने उनमें से किसी को भी शादी के लिए नहीं चुना. उससे उसके पिता बहुत निराश हुए.

लेकिन तभी एक राजकुमारी देरी से आई. राजकुमार के पास उस राजकुमारी को देने के लिए कोई गहना नहीं बचा था, लेकिन राजकुमार सिद्धार्थ को तुरंत यह पता चल गया कि वो उसी युवती से शादी करना चाहता था. राजकुमार ने अपने पहने हुए चमचमाते गहने उतारकर उस राजकुमारी को दे दिए, जिसका नाम यशोधरा था.

सुंदर और बुद्धिमान यशोधरा से शादी करने के बाद, राजकुमार सिद्धार्थ इतने खुश हुए कि वे एक पल के लिए यह भी भूल गए कि उन्होंने पीड़ा देखी थी और दर्दनाक करुणा महसूस की थी. इसके बजाय, उन्होंने अपने पिछले कुछ सुखी जीवनों को याद किया जब यशोधरा पिछले जन्मों में भी उनकी पत्नी थी. उन्होंने विशेष रूप से खुशहाल उस जीवन को याद किया जब वो हरे भरे जंगल में घूमते हुए एक बाघ थे और यशोधरा उनकी साथी थी. उसे फिर से पाकर राजकुमार बहुत खुश थे.

एक शाम, राजा ने हमेशा की तरह एक दावत दी. कलाइयों और पैरों में झनझनाती सुनहरी घंटियों वाली सैकड़ों नृत्यांगनाएं देर रात संगीत पर अपनी सुंदर भुजाओं को घुमाती और गोल-गोल घूमती रहीं. लेकिन जब नृत्य बंद हो गया और सभी लोग बिस्तर पर सोने चले गए, तब राजकुमार सिद्धार्थ बेचैन हुए. उन्हें नींद नहीं आई और वो महल के हॉल में घूमते रहे.

जब वो बड़े हॉल में पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि सैकड़ों नाचने वाली लड़कियाँ फर्श पर पसीने से तर और थकी हुई थीं. उनमें से कुछ दर्द से कराह रही थीं और अपने पैरों और पीठ को दबा रहीं थीं जो इतने अधिक नाचने से दुख रही थीं. राजकुमार ने उनके लहूलुहान और छालेदार पैर देखे. फिर से, राजकुमार सिद्धार्थ ने पीड़ा देखी और उन्हें अपार दया और करुणा महसूस हुई.

अब उन्होंने फैसला किया कि उन्हें अपने पिता के महल को छोड़ना होगा और दुखों को खत्म करने का रास्ता खोजने के लिए असली दुनिया में जाना होगा.

यह एक दर्दनाक फैसला था, क्योंकि यशोधरा ने हाल ही में एक बच्चे को जन्म दिया था. लेकिन इसके बावजूद राजकुमार सिद्धार्थ ने चन्ना को अपना घोड़ा और रथ लाने का आदेश दिया. वो अब महल में और अधिक रहना सहन नहीं कर सकते थे और उन्होंने अपने पिता के सोते हुए छोड़ने का निश्चय किया.

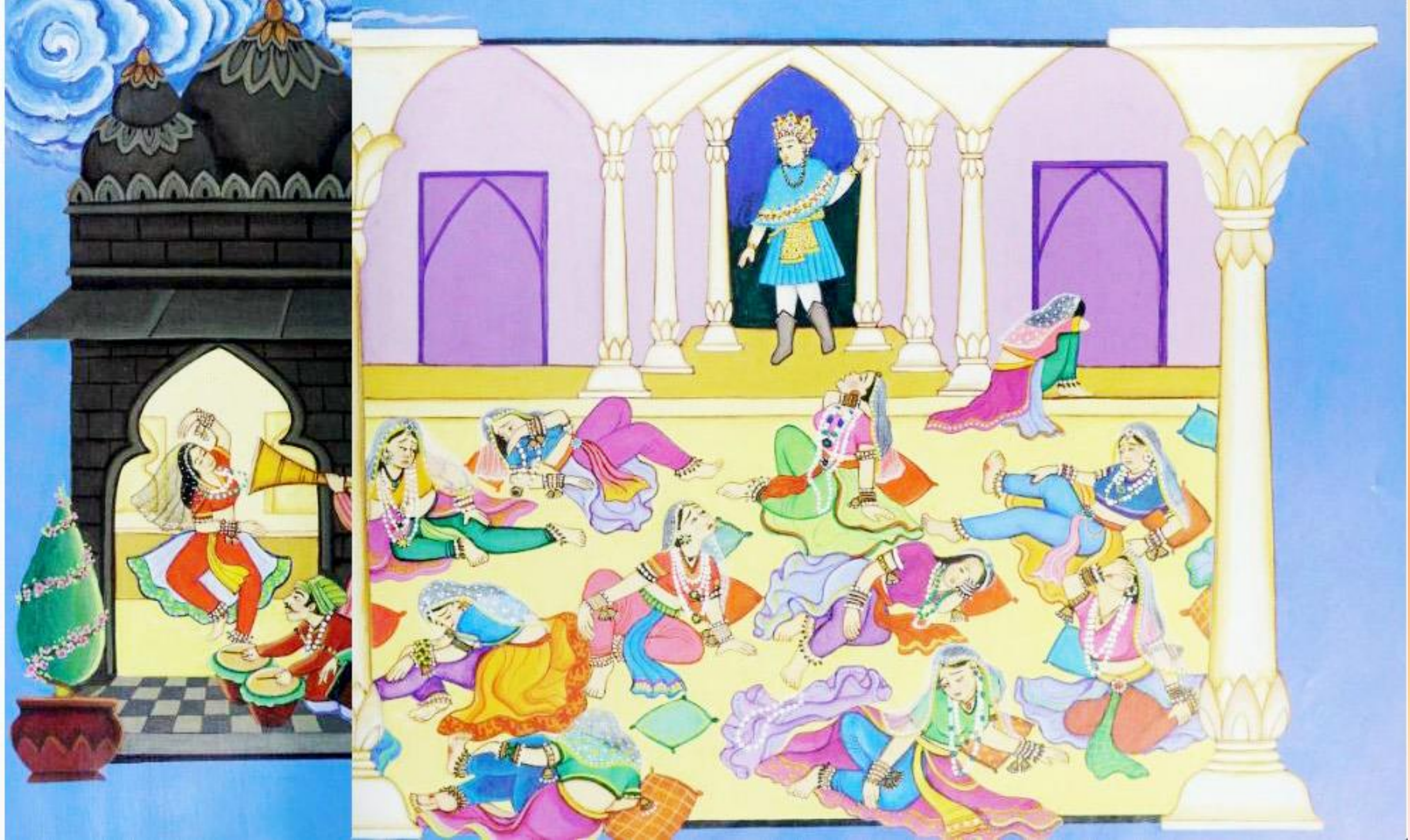

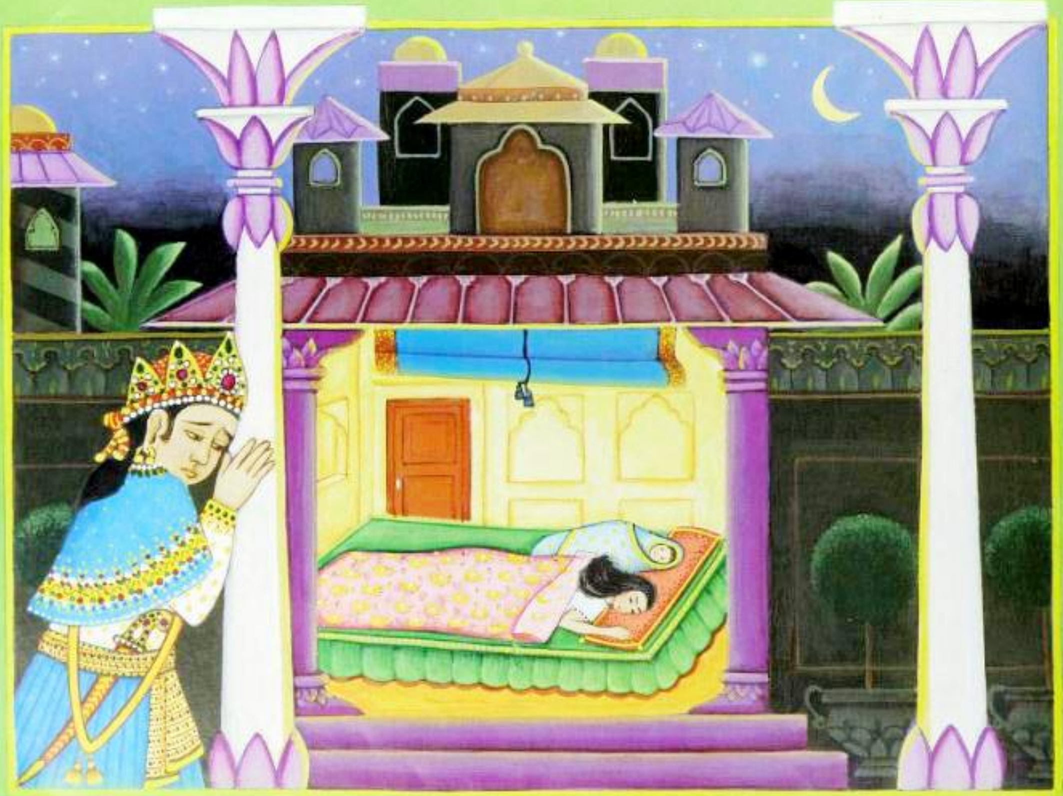

"महाराज, निश्चित रूप से आप जानते हैं कि राजा ऐसा नहीं होने देंगे," चन्ना ने कहा.

"इसीलिए मुझे तब जाना होगा जब पिताजी सो रहे हों," राजकुमार ने कहा.

"लेकिन मेरे भगवान आप क्यों जा रहे हैं? जो भी चीज़ आप चाहते हैं वो यहां उपलब्ध है."

राजकुमार ने कहा, "दुख को समाप्त करने का रास्ता खोजने के लिए मुझे दुनिया में जाना ही होगा. अब जल्दी से मेरा घोड़ा लाओ!"

और चन्ना ने वैसा ही किया जैसा राजकुमार ने उसे आज्ञा दी.

राजकुमार सिद्धार्थ अपनी पत्नी और बच्चे को अलविदा कहना सहन नहीं कर सकते थे. राजकुमार उन्हें बहुत प्यार करते थे. वो जानते थे कि अगर यशोधरा ने उनसे वहीं रहने को कहा, जैसा बहुत संभव था, तो फिर वो उन्हें कभी नहीं छोड़ सकते थे. जब उन्होंने अपनी खूबसूरत सोई हुई पत्नी और बेटे को देखा, तो राजकुमार को एक अन्य तरह की पीड़ा का अनुभव हुआ - वो जिन्हे प्यार करते थे, उनके साथ न रहने का विछोह.

तब राजकुमार को एहसास हुआ कि प्यार भी, बुढ़ापे, बीमारी और मौत की तरह दुख का कारण बन सकता था.

"मूर्ख! तुम एक महान और धनी राजा हो सकते हो—सारी दुनिया के शासक!" जैसे ही चन्ना ने घोड़े की बागडोर संभाली, मारा ने फुंफकार मारी.

लेकिन राजकुमार सिद्धार्थ ने अपनी आँखें लगातार आगे रखीं और उस दुष्ट की ओर कोई ध्यान नहीं दिया.

किसी चमत्कार से, राजा को जगाए बिना कोई आवाज किए बिना महल के द्वार खुल गए. घोड़ों की टापें और रथ के पहिए भी शांत थे, क्योंकि राजकुमार सिद्धार्थ चांदनी में बाहर निकल रहे थे. रथ के पहिए जहां भी लुढ़के, वहां तुरंत फूलों का मार्ग खिल गया. रथ तेजी से और तेजी से लुढ़कने लगा और मारा उसके साथ नहीं रह सका.

जल्द ही वे एक जंगल में पहुंचे. राजकुमार ने चन्ना से कहा, "मेरे दोस्त, मुझे तुम्हें यहीं अलविदा कहना चाहिए."

चन्ना रोया. घोड़ा भी रोया. वो राजकुमार के पैर चूमने के लिए घुटनों के बल टिका.

राजकुमार अपने राजसी वस्त्र और आभूषण उतार कर जंगल में चले गए, जहां उनकी भेंट एक शिकारी से हुई. उन्होंने उस आदमी से उसका फटा हुआ पीला चमड़े का लबादा माँगा, जिसे शिकारी ने उन्हें दिया. फिर राजकुमार सिद्धार्थ ने अपनी तलवार ली और अपने लंबे बाल काट डाले, जो रात के समान काले और चमकदार थे. फिर उन्होंने बालों और तलवार को नदी में फेंक दिया. तभी उनके सामने एक भिखारी का कटोरा प्रकट हुआ. वो अब राजकुमार सिद्धार्थ नहीं रहे थे. अब वो केवल गौतम थे, एक साधारण भिखारी, जैसे कि सबसे बुद्धिमान साधु ने भविष्यवाणी की थी.

जब ऐसा हुआ, तो मारा पहले से कहीं अधिक भयभीत हुआ. उसे लगा कि गौतम लोगों की पीड़ा को समाप्त करने का एक तरीका खोजने में सफल होंगे. यदि ऐसा होगा, तो मारा की ज़िंदगी हराम हो जाएगी.

"मेरी बात सुनो! अपने पिता के महल में वापस जाओ! क्या मैंने तुमसे नहीं कहा, कि तुम जल्द ही अब तक मशहूर सबसे महान और सबसे अमीर राजा बनोगे - पूरी दुनिया में सबसे शक्तिशाली राजा," मारा ने एक बार फिर फुफकारा. लेकिन फिर से गौतम ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया.

गौतम पहाड़ों पर एक गुफा में गए जहाँ एक साधु रहता था. वहां पांच और युवक उनसे सीखने आए. साधु ने कहा था कि उन्हें खुद को भूखा रखकर पीड़ा में रहना चाहिए, क्योंकि सत्य प्राप्ति का वही एकमात्र तरीका था.

गौतम ने वैसा ही किया जैसा साधु ने उन्हें बताया. वो तब तक वहां बैठे रहे जब तक कि उनका पीला वस्त्र मैला और सड़ नहीं गया. उनकी हड्डियाँ सख्त हो गईं और उनमें दर्द होने लगा, और वो जल्द ही एक कंकाल जितने पतले-दुबले हो गए. उनकी सुनहरी त्वचा सुस्त और धूल से भर गई. उनकी आँखें उनकी खोपड़ी के खोखलों की गहराई में डूब गईं, हालाँकि वे अभी भी किसी तारे की तरह चमकती थीं. लेकिन गौतम ने उससे सत्य खोजने का सही तरीका नहीं सीखा, हालाँकि उन्होंने निश्चित रूप से दर्द और पीड़ा सहन करना ज़रूर सीखी.

अब गौतम समझ गए कि सत्य का मार्ग बहुत अधिक आनंद का नहीं था, जो उन्होंने अपने पिता के महल में सीखा था, और न सत्य का मार्ग बहुत अधिक पीड़ा का था. उन्हें लगा कि एक और रास्ता - सुख और दर्द के बीच का एक मध्य मार्ग था.

पास के एक गांव में रहने वाली एक लड़की आई और उसने भूखे भिखारी गौतम को कुछ मीठे चावल की खीर खिलाई जो उसने मलाई से बनाई थी. खाना खाने के बाद मांस ने, गौतम की हड्डियों को फिर से ढँक दिया, और उनकी सुनहरी त्वचा फिर से चमक उठी. गौतम खड़ा हुआ और वहां से चला दिया, जबकि अन्य पांच युवकों ने उनका मजाक उड़ाया.

"गौतम को देखो," उन्होंने कहा, "देखो, वो हमारी तरह पीड़ित होने से कैसे डरता है. हा! उसमें एक साधू होने तक का साहस नहीं है!"

लेकिन गौतम ने भिखारी का कटोरा लेकर आवश्यक भोजन की भीख मांगते हुए अपना सफर ज़ारी रखा.

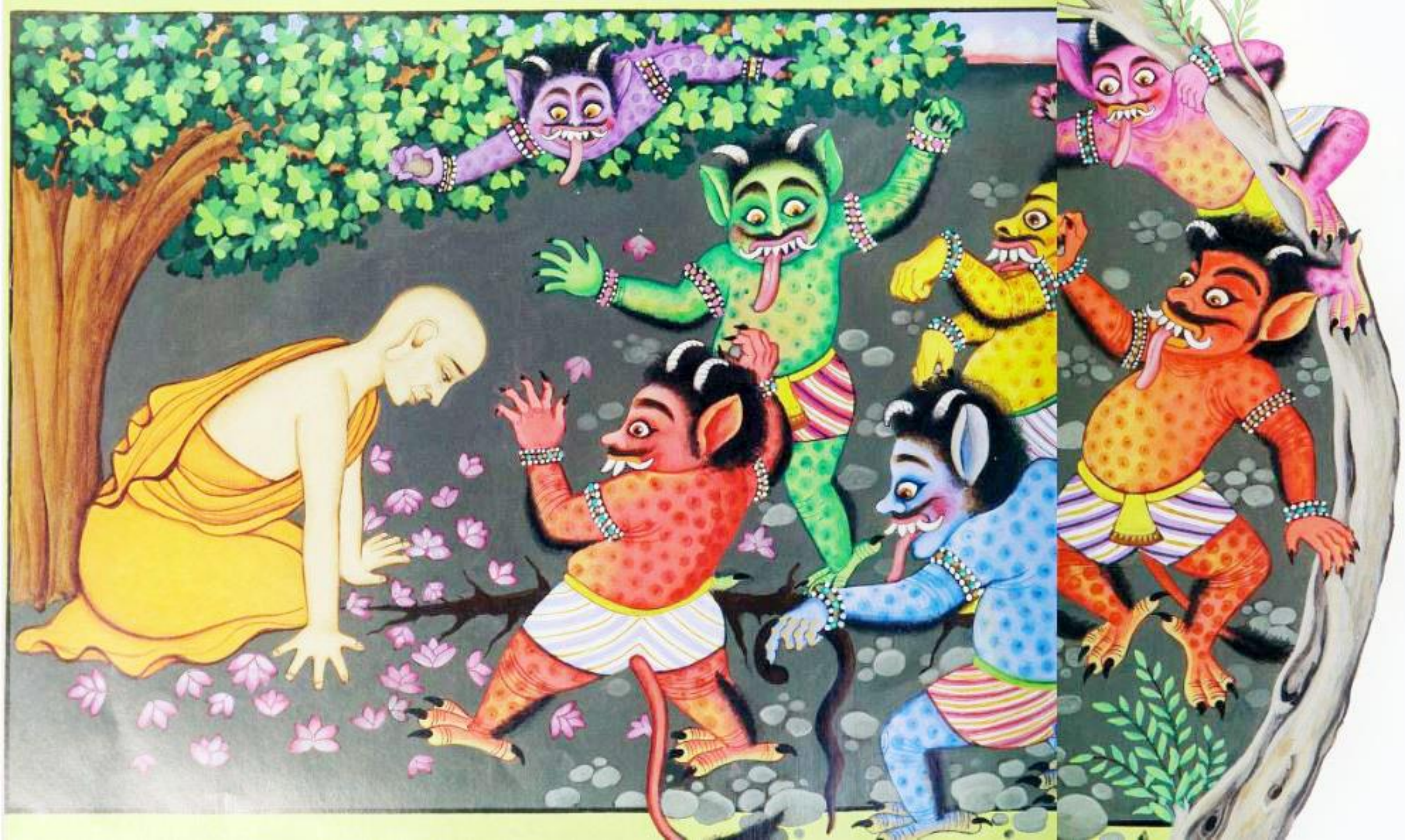

गौतम तब तक चले जब तक कि वो एक विशाल फैले हुए एक महान बरगद के पेड़ तक नहीं पहुंचे. वो पेड़ की शाखाओं के नीचे बैठ गए, उन्होंने अपने पैर मोड़ लिए, अपने हाथों को जाँघों पर रखा, अपनी पलकें नीची कीं और ध्यान में मगन हो गए.

उन्होंने महल में अपने जीवन पर ध्यान केंद्रित किया, वो सब जो उन्होंने अपने कई जन्मों में जाना था, वो सब जो उन्होंने कभी नहीं जाना था. जब उन्होंने वो किया, तब उन्हें समझ में आया कि जिस चीज की शुरुआत होती है उसका अंत भी होना चाहिए. उन्होंने देखा कि कैसे हर चीज का अपना धर्म या सत्य होता था, और ब्रह्मांड में हर चीज में परिवर्तन है. जैसे-जैसे उन्होंने ध्यान केंद्रित किया, गौतम को सभी चीजों का अर्थ समझ में आने लगा और इस समझ ने उन्हें शांति प्रदान की. उन्हें अब पीड़ा महसूस नहीं हुई; उनका ज्ञान इतना महान था. अंत में वो मुस्कराए. उन्हें वो सत्य मिल गया था जिसकी उन्हें तलाश थी.

जब मारा ने गौतम को महान बरगद के वृक्ष के नीचे इतनी शांति से बैठे देखा, तो वो बहुत, बहुत गुस्सा हुआ. उसने गौतम को डराने के लिए भयानक राक्षसों को भेजा.

राक्षसों ने गौतम पर छलांग लगाई. वे चिल्लाए और उन्होंने भयानक चेहरे बनाए, लेकिन गौतम ने उनकी उपेक्षा की. उन्होंने गौतम पर पत्थर फेंके, लेकिन गौतम से टकराते ही पत्थर, कोमल फूलों में बदल गए.

अंत में, गौतम ने अपनी हथेली को शांति से, लेकिन दृढ़ता से पृथ्वी पर रखा और ज़मीन फट गई. मारा के सभी कुरूप राक्षस पृथ्वी की अंधेरी दरार में गिर कर लुप्त हो गए.

इसके बाद मारा ने गौतम को लुभाने के लिए अपनी खूबसूरत बेटियों को उनके पास भेजा, लेकिन शांतिपूर्ण भिखारी ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया.

तब मारा ने भयानक आंधी भेजी. महान बरगद के पेड़ की मोटी हरी पत्तियों के माध्यम से बारिश और ओले गिरे, लेकिन नागों का राजा आया और उसने गौतम को सुरक्षित रूप से घेर लिया. साँप का चौड़ा, चपटे फन ने गरीब भिखारी को बारिश से बचाया ठीक उसी तरह जैसे उसके पिता के बगीचे में सफेद छाता करता था.

इस बार मारा ने हार मान ली.

बरगद के पेड़ के नीचे बैठने के सात सप्ताह बाद गौतम ने ज्ञान प्राप्त किया. ऐसा प्रकाश जो सभी चीजों में सत्य दिखाता था. उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया और वो शांति पाई जिसने पीड़ा पर विजय प्राप्त की. गौतम ने सभी चीजों को नियंत्रित करने वाले कानूनों को समझा. सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि गौतम ने इस ज्ञान को अपने मन में पाया था.

उन्हें समझ में आया कि बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु हमेशा ही रहेगी. वो यह भी समझ गए कि वो इसमें कुछ भी इसे बदल नहीं कर सकते थे, क्योंकि सभी चीजों की एक शुरुआत और अंत होता था. लेकिन गौतम ने गहरी एकाग्रता के माध्यम से दुख को रोकने का एक तरीका खोज लिया था जिससे उन्हें शांति प्राप्त हुई. अन्य लोगों के प्रति उनकी करुणा ने उन्हें इस ज्ञान को सभी लोगों के साथ साझा करना चाहा. जो भी सीखना चाहता था वो उसे सिखाने को तैयार थे.

जब गौतम बरगद के पेड़ के नीचे से उठे फिर वो चलने लगे. जैसा ही उन्होंने वो किया, उनके भीतर से एक तेज रोशनी चमकी और उनके चारों चमक उठी. अब वो गौतम, एक सामान्य भिखारी नहीं थे, अब वो बुद्ध थे, जिसका अर्थ था प्रबुद्ध.

गौतम बुद्ध ने पूर्व की ओर यात्रा की. वो जहां भी जाते, नम्रता से बोलते और दया से काम लेते थे. जब भी वे किसी गाँव में पहुँचते वो वहाँ के सबसे बड़े वृक्ष के नीचे बैठ जाते, और धूल में एक घेरा बना लेते थे. फिर वो धैर्यपूर्वक उन लोगों की प्रतीक्षा करते जो उन्हें सुनना चाहते थे. फिर बुद्ध लोगों के साथ चुपचाप और सोच-समझकर बात करना शुरू कर देते थे. और उनमें उनके कई पुराने साथी भी शामिल थे. आनंद, उनका चचेरा भाई उन्हें "ज्ञानी" कहने लगा था.

जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए बुद्ध ने हजारों लोगों को पीड़ा अंत करने का मार्ग सिखाया. फिर उनके शिष्य दुनिया भर में भटकते रहे - बुद्ध की तरह भीख माँगते हुए, पीले वस्त्र पहनकर - दूसरों को सिखाते रहे. यहाँ तक कि वे पाँच युवक भी, जिन्होंने मध्य-मार्ग चुनते समय उनका मज़ाक उड़ाया था, वे भी उनसे सुनने और सीखने के लिए आए. यहाँ तक कि जिस बेटे को वो महल में छोड़ आए थे, वो भी बुद्ध का एक अनुयायी बन गया.

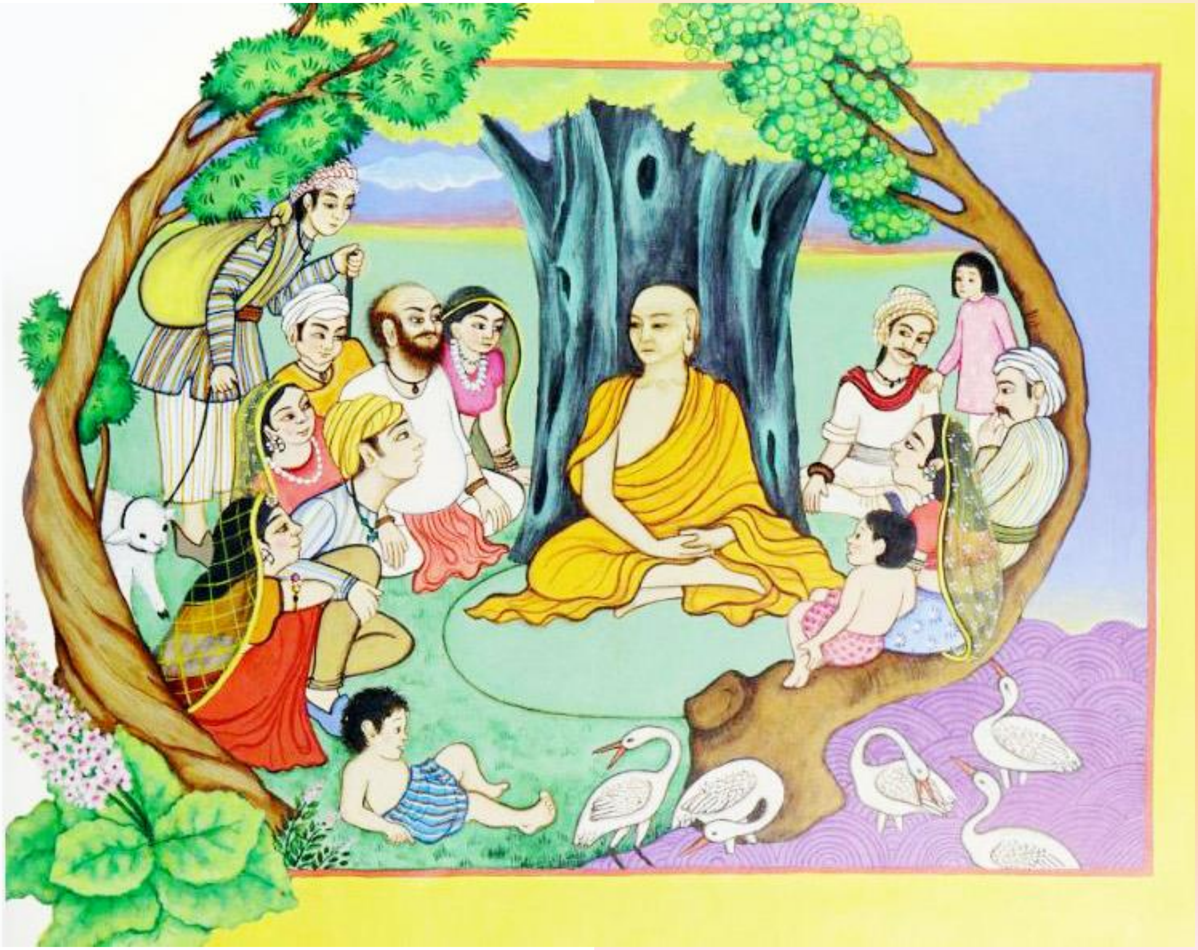

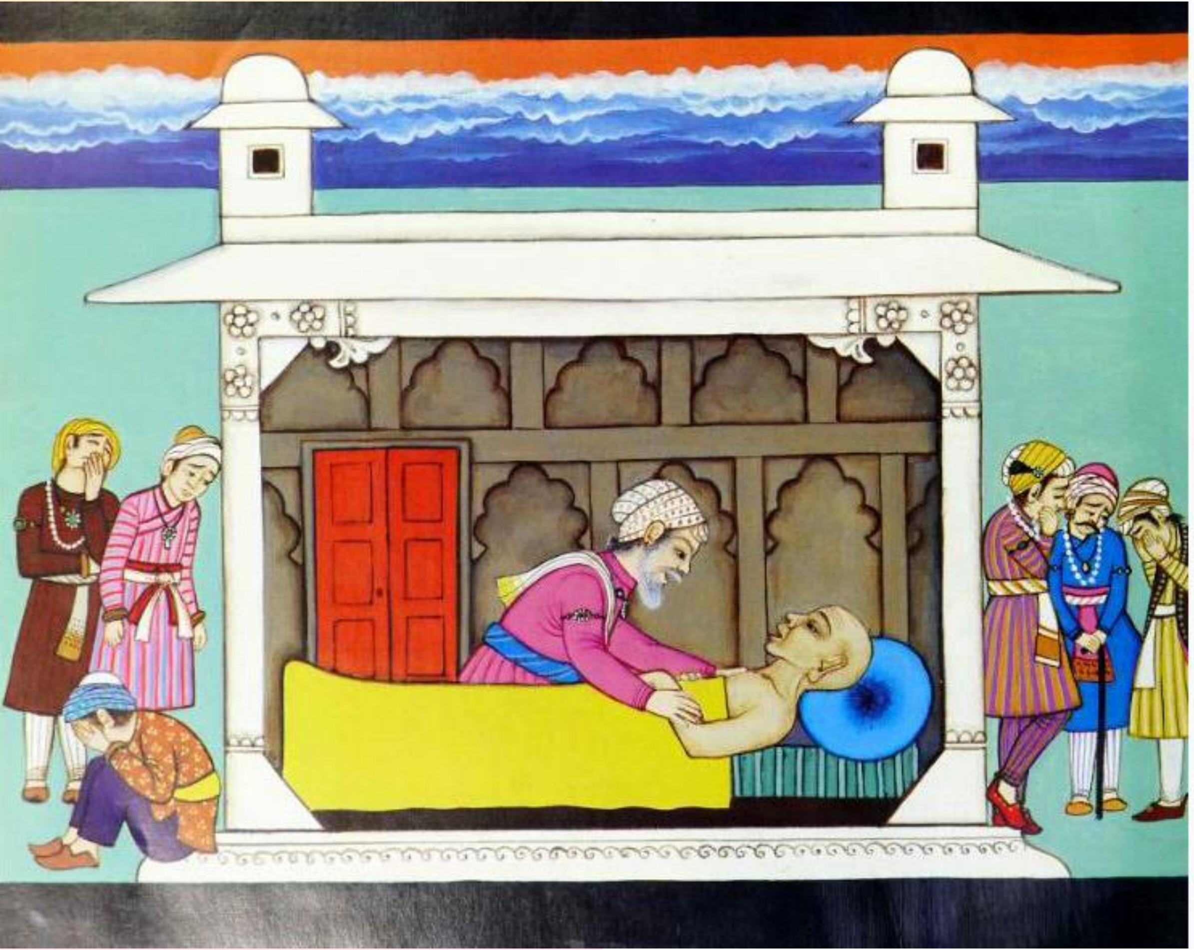

जब वे अस्सी वर्ष के हुए को बुद्ध को पता चल गया कि उनकी मृत्यु का समय आ गया था.

उस रात, उन्होंने वो खाना खाया जो एक गरीब आदमी उनके लिए अपने भिखारी के कटोरे में छोड़ गया था. या तो वो खाना सड़ा हुआ था या फिर उसमें जंगल का कोई जहरीला मशरूम था. कारण जो भी हो, खाना खाकर बुद्ध बहुत बीमार हो गए.

आनंद ने बड़ी कोमलता से उनकी देखभाल की लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ. उनके सभी प्रयासों के बावजूद, उनके प्रिय चचेरे भाई और शिक्षक, कमजोर और बुजुर्ग बुद्ध मृत्यु की कगार पर थे.

"मरो मत," आनंद ने उनसे विनती की. "यदि आप हमें छोड़ देंगे तो फिर हमें कौन शिक्षा देगा? हमें कौन निर्वाण का मार्ग दिखाएगा और वो ज्ञान जिससे हम सभी कष्टों पर विजय प्राप्त कर सकें."

बुद्ध मुस्कुराए. "जब मैं मर जाऊं तो दुखी मत होना, मेरे दोस्त. याद रखना - सभी चीजें जो कभी शुरु हुई थीं, उनका अंत भी ज़रूर होगा. और क्या मैंने आपको यह नहीं सिखाया कि निर्वाण का एकमात्र तरीका आपके खुद के भीतर है, और आपको उसे खुद अपने लिए खोजना होगा."

आनंद ने सिर हिलाया.

बुद्ध ने कहा, "अपने भीतर चमकने वाले प्रकाश को जलाए रखो, क्योंकि वही तुम्हें सत्य की ओर ले जाएगा." फिर, उन्होंने मुस्कुराते हुए, आखिरी बार अपनी आँखें बंद कर लीं और निर्वाण प्राप्त किया.

उनका धर्म पूर्ण हो गया. उनका काम पूरा हो गया. अब गौतम बुद्ध को अपने जीवन के अंतहीन चक्र को चालू नहीं रखना पड़ेगा, जिसके बारे में चन्ना सारथी ने उन्हें बहुत पहले बताया था.

अंत